## *पाठ – 12 लखनवी अंदाज (लेखक – यशपाल)* *MODULE – 1*

कार्य - पत्रक

प्र. 1 लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों ख़रीदा ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

प्र. 2 लेखक के अनुसार नवाब साहब ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों ख़रीदा ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

प्र. 3 रेल के डिब्बे में प्रवेश करने पर नवाब साहब व लेखक में क्या – क्या प्रतिक्रिया दिखाई दी ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

प्र. 4 लेखक ने खीरा नहीं खाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

प्र. 5 नवाब साहब ने खीरे का क्या किया और क्यों ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

प्र. 6 नवाब साहब की स्थिति देखकर और बातें सुनकर लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : ----------

---

---

---

---

## *पाठ – 12 लखनवी अंदाज (लेखक – यशपाल)* *MODULE – 1*

कार्य - पत्रक

प्र. 1 लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों ख़रीदा ?

उत्तर लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के सम्बन्ध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया।

प्र. 2 लेखक के अनुसार नवाब साहब ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों ख़रीदा ?

उत्तर लेखक के अनुसार नवाब साहब ने सेकंड क्लास का टिकट यह सोचकर ख़रीदा होगा कि वे अकेले यात्रा कर रहे हैं , किसी को पता नहीं चलेगा और यात्रा किफायती भी रहेगी।

प्र. 3 रेल के डिब्बे में प्रवेश करने पर नवाब साहब व लेखक में क्या – क्या प्रतिक्रिया दिखाई दी ?

उत्तर लेखक रेलगाड़ी के सेकंड क्लास के डिब्बे को निर्जन समझकर चढ़ गए लेकिन वहाँ एक बर्थ पर नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश पालथी मारकर बैठे हुए थे लेखक को लगा की उस नवाब साहब के एकांत चिन्तन में विघ्न पड़ गया है उस नवाब ने लेखक से मेल – मिलाप के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया।

प्र. 4 लेखक ने खीरा नहीं खाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर लेखक ने कहा कि इस समय कुछ खाने की इच्छा नहीं हो रही है। वैसे भी उनका आमाशय कमजोर है।

प्र. 5 नवाब साहब ने खीरे का क्या किया और क्यों ?

उत्तर नवाब साहब ने अपनी नवाबी दिखाने के लिए खीरे की फाँक को उठाया , मुँह तक ले गए , सूँघा और स्वाद के आनन्द में पलकें मूँद ली। इसके बाद उन्होंने खीरे की फाँकों को एक – एक करके खिड़की से बाहर फेंक दिया।

प्र. 6 नवाब साहब की स्थिति देखकर और बातें सुनकर लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर नवाब साहब की स्थिति देखकर और बातें सुनकर लेखक के ज्ञान चक्षु खुल गए। उन्होंने सोचा कि कल्पना मात्रा से पेट भरकर डकार आ सकती है तो बिना विचार , घटना और पत्रों के लेखक की इच्छा मात्र से ‘ नई ’ कहानी क्यों नहीं बन सकती ?

राजेन्द्र प्रसाद
टी.जी.टी. – हिन्दी,संस्कृत